RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

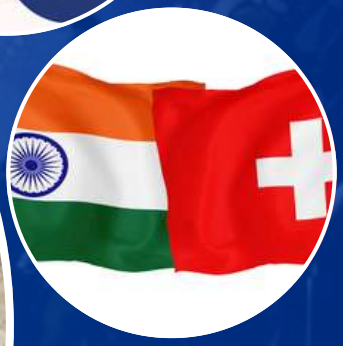

DATE
दिसंबर
16
2024

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

भारत-यूएई संयुक्त आयोग बैठक / India-UAE Joint Commission Meeting

नई दिल्ली में 15वीं भारत-यूएई संयुक्त आयोग बैठक का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. एस. जयशंकर और शेख अब्दुल्ला बिन जायद अल नाहयान ने की।

भारत-यूएई संयुक्त आयोग बैठक (15वीं) के मुख्य बिंदु:

1. **सामरिक साझेदारी की प्रगति:**
   - भारत और यूएई के बीच 2017 में शुरू हुई व्यापक सामरिक साझेदारी के तहत द्विपक्षीय संबंधों में उल्लेखनीय वृद्धि।
2. **द्विपक्षीय निवेश समझौता (Bilateral Investment Treaty):**
   - भारत-यूएई द्विपक्षीय निवेश समझौता लागू।
   - भारत-यूएई व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (CEPA) से व्यापारिक संबंध मजबूत।
   - फिनटेक, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर और केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (CBDC) में सहयोग।
3. **भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEEC):**
   - समुद्री संपर्क और व्यापार बढ़ाने के लिए आर्थिक गलियारे पर चर्चा।
   - वर्चुअल ट्रेड कॉरिडोर (VTC) और MAITRI इंटरफेस से पेपरलेस व्यापार प्रक्रियाएं सुगम बनाने का प्रयास।
4. **ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग:**
   - दीर्घकालिक आपूर्ति समझौते, अपस्ट्रीम-डाउनस्ट्रीम परियोजनाएं, और ग्रीन हाइड्रोजन में सहयोग।
   - परमाणु ऊर्जा और महत्वपूर्ण खनिजों में नई साझेदारियों पर जोर।
5. **रक्षा और सुरक्षा सहयोग:**
   - जनवरी 2024 में पहला सैन्य अभ्यास 'डेजर्ट साइक्लोन' सफलतापूर्वक संपन्न।
   - रक्षा उद्योगों के बीच पहली बार भारत-यूएई रक्षा साझेदारी मंच का आयोजन।
6. **शिक्षा क्षेत्र में प्रगति:**
   - IIT-दिल्ली अबू धाबी परिसर का उद्घाटन।
   - दुबई में IIM अहमदाबाद और भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (IIFT) का कैंपस स्थापित करने की प्रक्रिया जारी।
   - उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच संयुक्त शोध, शैक्षणिक आदान-प्रदान और नई तकनीकों के विकास पर जोर।
7. **अंतरिक्ष, स्वास्थ्य और खाद्य सुरक्षा में सहयोग:**
   - अंतरिक्ष, हेल्थकेयर, कृषि प्रौद्योगिकी, लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति श्रृंखला में बढ़ते सहयोग पर जोर।
8. **ध्रुवीय और महासागरीय अनुसंधान:**
   - एमिरेट्स पोलर मिशन और भारत के राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं महासागर अनुसंधान केंद्र (NCPOR) के बीच समझौता।
   - ध्रुवीय क्षेत्रों में शोध, शैक्षणिक सहयोग और क्षमता निर्माण में साझेदारी।

भारत-यूएई संबंध: मुख्य बिंदु-

1. राजनीतिक संबंध (Political Relations):
- भारत और यूएई ने 1972 में राजनयिक संबंध स्थापित किए।
- दोनों देश I2U2 (भारत-इजराइल-यूएई-अमेरिका) और UFI (यूएई-फ्रांस-भारत) जैसे बहुपक्षीय मंचों का हिस्सा हैं।
- जी-20 शिखर सम्मेलन 2023 में यूएई को अतिथि देश के रूप में आमंत्रित किया गया।

2. आर्थिक और व्यापारिक संबंध (Economic & Commercial Relations):
- भारत-यूएई व्यापार 2021-22 में **84.84 बिलियन अमेरिकी डॉलर** का रहा, जिससे यूएई भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बना।
- 2022-23 में यूएई, अमेरिका के बाद भारत का दूसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य रहा, निर्यात राशि लगभग **31.61 बिलियन अमेरिकी डॉलर**।
- **व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (CEPA)** 2022 में व्यापार संबंधों को मजबूत करने के लिए हस्ताक्षरित।
- **द्विपक्षीय निवेश संधि (BIT)** 2024 में निवेश को प्रोत्साहित और सुरक्षित करने के लिए लागू।

3. रक्षा सहयोग (Defence Cooperation):
- **रक्षा सहयोग समझौता** 2003 में हस्ताक्षरित और 2004 में प्रभावी।
- रक्षा सहयोग का संचालन **संयुक्त रक्षा सहयोग समिति (JDCC)** के माध्यम से।
- 2024 में **डेजर्ट साइक्लोन सैन्य अभ्यास** रक्षा सहयोग में मील का पत्थर।

4. अंतरिक्ष सहयोग (Space Cooperation):
- 2016 में ISRO और UAE स्पेस एजेंसी के बीच बाह्य अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए समझौता।

5. भारतीय समुदाय (Indian Community):
- लगभग 3.**89 मिलियन भारतीय** प्रवासी यूएई में रहते हैं, जो देश की कुल जनसंख्या का लगभग **35 प्रतिशत** है।
- भारतीय समुदाय यूएई का सबसे बड़ा जातीय समूह है।

6. विशेष पहल (Special Initiatives):
- **India-UAE CEPA** से व्यापार और निवेश में नए आयाम जुड़े।
- **Desert Cyclone 2024** और अंतरिक्ष अनुसंधान सहयोग, भारत-यूएई के बढ़ते संबंधों को दर्शाते हैं।

आपदा प्रबंधन (संशोधन) विधेयक, 2024 / The Disaster Management (Amendment) Bill, 2024

लोकसभा ने आपदा प्रबंधन (संशोधन) विधेयक, 2024 पारित किया। यह विधेयक आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 में बदलाव करता है और 15वें वित्त आयोग की सिफारिशों के अनुसार विकास योजनाओं में आपदा प्रबंधन को मुख्यधारा में लाने का प्रयास करता है।

आपदा प्रबंधन (संशोधन) विधेयक, 2024 के मुख्य बिंदु:

1. आपदा प्रबंधन योजनाओं की तैयारी:

- अब राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) और राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (SDMA) आपदा प्रबंधन योजनाएं तैयार करेंगे।
- पहले यह कार्य राष्ट्रीय और राज्य कार्यकारी समितियों द्वारा किया जाता था।

2. NDMA और SDMA के कार्य:

- **नई जिम्मेदारियां जोड़ी गईं:**
  - आपदा जोखिमों का समय-समय पर आकलन करना, खासकर जलवायु परिवर्तन से संबंधित जोखिम।
  - निचले स्तर के प्राधिकरणों को तकनीकी सहायता प्रदान करना।
  - राहत के लिए न्यूनतम मानकों के दिशा-निर्देश तैयार करना।
  - राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर आपदा डाटा तैयार करना।
- **विनियम बनाने की शक्ति:** NDMA को केंद्र सरकार की मंजूरी के बाद अधिनियम के तहत विनियम बनाने की शक्ति दी गई है।

3. आपदा डाटा बेस:

- राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर व्यापक आपदा डाटा बेस बनाने का प्रावधान।

4. शहरी आपदा प्रबंधन प्राधिकरण:

- राज्य सरकार को राजधानी शहरों और नगर निगम वाले शहरों के लिए एक अलग शहरी आपदा प्रबंधन प्राधिकरण स्थापित करने का अधिकार दिया गया।

5. राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (SDRF):

- राज्य सरकार को राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (SDRF) गठित करने का अधिकार।
- राज्य सरकार SDRF के कार्य और इसके सदस्यों की सेवा शर्तें तय करेगी।

6. मौजूदा समितियों को वैधानिक दर्जा:

- **राष्ट्रीय संकट प्रबंधन समिति (NCMC):**
  - गंभीर और राष्ट्रीय स्तर की आपदाओं से निपटने वाली नोडल संस्था होगी।
- **उच्च स्तरीय समिति (HLC):**
  - आपदाओं के दौरान राज्य सरकारों को वित्तीय सहायता प्रदान करेगी।

7. NDMA में नियुक्तियां:

- NDMA केंद्र सरकार की पूर्व मंजूरी से अधिकारियों और कर्मचारियों की संख्या और श्रेणी तय कर सकेगा।
- आवश्यकता के अनुसार विशेषज्ञों और सलाहकारों की नियुक्ति कर सकेगा।

आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के प्रमुख तथ्य:

1. पृष्ठभूमि और निर्माण:

- 2004 की सुनामी के बाद यह अधिनियम लागू किया गया।
- इसका विचार 1998 के ओडिशा सुपर साइक्लोन के समय से ही विचाराधीन था।

2. संस्थागत ढांचा:

- **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA):** आपदा प्रबंधन का मुख्य निकाय।
- **राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (SDMAs):** राज्य स्तर पर आपदा प्रबंधन के लिए।
- **राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (NDRF):** राहत और बचाव कार्यों के लिए।
- **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान (NIDM):** आपदाओं से संबंधित शोध, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के लिए।

3. नीति और योजनाएं:

- **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन नीति, 2009।**
- **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन योजना, 2016।**

4. उपलब्धियां:

- प्राकृतिक आपदाओं का प्रभावी प्रबंधन किया गया।
- हज़ारों लोगों की जान बचाई और राहत, बचाव, पुनर्वास सेवाएं प्रदान की गईं।

5. आवश्यकता और महत्व:

- जलवायु परिवर्तन के कारण आपदाओं की बढ़ती घटनाएं NDMA और अन्य संस्थाओं की भूमिका को और महत्वपूर्ण बनाती हैं।
- इन संस्थानों को अधिक जिम्मेदारियां और संसाधन सौंपे जाने की आवश्यकता है।

आपदा प्रबंधन (संशोधन) विधेयक, 2024 से जुड़ी चिंताएँ:

1. **केन्द्रिकरण**: विधेयक में आपदा प्रबंधन को और अधिक केन्द्रित किया गया है, जिससे प्रतिक्रिया में देरी हो सकती है।
2. **स्थानीय संसाधनों की कमी**: स्थानीय स्तर पर संसाधन और धन की कमी का समाधान नहीं किया गया है।
3. **जलवायु परिवर्तन की अनदेखी**: जलवायु-जनित जोखिमों और अंतरराष्ट्रीय समझौतों को विधेयक में समुचित रूप से शामिल नहीं किया गया है।
4. **आपदा की सीमित परिभाषा**: हीटवेव जैसी बढ़ती समस्याओं को आपदा की परिभाषा में शामिल नहीं किया गया है।

eCourts मिशन मोड परियोजना / eCourts Mission Mode Project

कानून और न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने भारतीय न्यायपालिका में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के बुनियादी ढांचे को उन्नत बनाने के उद्देश्य से eCourts मिशन मोड परियोजना के क्रियान्वयन की घोषणा की। यह परियोजना न्यायिक प्रक्रियाओं को तेज, पारदर्शी और कुशल बनाने के लिए चरणबद्ध तरीके से न्याय विभाग और सुप्रीम कोर्ट की ई-कमेटी के सहयोग से लागू की जा रही है।

About eCourts Project:

eCourts परियोजना का उद्देश्य भारतीय न्यायपालिका को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के माध्यम से सशक्त बनाना है। यह परियोजना सुप्रीम कोर्ट की e-कमेटी द्वारा 2005 में प्रस्तुत "भारतीय न्यायपालिका में ICT के कार्यान्वयन के लिए राष्ट्रीय नीति और कार्य योजना" पर आधारित है।

मुख्य बिंदु:

- **e-कमेटी:** भारत सरकार द्वारा सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के प्रस्ताव पर गठित एक निकाय, जो न्यायपालिका के डिजिटलीकरण और तकनीकी प्रबंधन में सुधार हेतु सलाह देती है।
- **देशव्यापी परियोजना:** यह पूरे देश के जिला न्यायालयों के लिए न्याय विभाग, कानून और न्याय मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित और निगरानी की जाने वाली अखिल भारतीय परियोजना है।

लक्ष्य:

1. नागरिकों को समयबद्ध और कुशल सेवाएं प्रदान करना।
2. न्यायालयों में निर्णय सहायता प्रणाली विकसित और लागू करना।
3. प्रक्रियाओं को स्वचालित कर जानकारी की पारदर्शिता सुनिश्चित करना।
4. न्याय प्रक्रिया को सुलभ, किफायती, प्रभावी और पारदर्शी बनाना।

eCourts परियोजना के चरण:

चरण I (2007-2015):

- न्यायालयों का बुनियादी कंप्यूटरीकरण।
- इंटरनेट कनेक्टिविटी की स्थापना।
- केस सूचना प्रणाली (CIS) का कार्यान्वयन।

चरण II (2015-2023):

- जिला और अधीनस्थ न्यायालयों का ICT सशक्तिकरण।
- वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सुविधाओं की शुरुआत।
- नागरिक केंद्रित सेवाएं जैसे e-पेमेंट गेटवे और प्रमाणित ऑनलाइन दस्तावेज़ उपलब्ध कराना।

चरण III (2023-2027):

- डिजिटल और पेपरलेस न्यायालयों का विकास।
- पुराने रिकॉर्ड और लंबित मामलों का डिजिटलीकरण।
- अस्पतालों और जेलों तक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग का विस्तार।
- डेटा प्रबंधन के लिए क्लाउड कंप्यूटिंग आर्किटेक्चर पर जोर।

लाभ:

1. **प्रभावशीलता:** न्यायिक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना, विलंब को कम करना, और केस प्रबंधन को बेहतर बनाना।
2. **पारदर्शिता:** न्यायालय की जानकारी को सार्वजनिक रूप से सुलभ बनाकर पारदर्शिता और उत्तरदायित्व बढ़ाना।
3. **सुलभता:** दूरस्थ क्षेत्रों और सीमित गतिशीलता वाले लोगों के लिए न्याय तक पहुंच को बेहतर बनाना।
4. **कम लागत:** कागजी कार्रवाई और यात्रा से जुड़े खर्चों को कम करना।
5. **आधुनिकीकरण:** भारतीय न्यायपालिका को वैश्विक मानकों के अनुरूप आधुनिक बनाना।

चुनौतियां:

1. **डिजिटल साक्षरता:** न्यायाधीशों, वकीलों और न्यायालय कर्मचारियों सहित सभी हितधारकों में डिजिटल साक्षरता सुनिश्चित करना।
2. **डेटा सुरक्षा:** साइबर खतरों से संवेदनशील न्यायालय डेटा की सुरक्षा।
3. **इन्फ्रास्ट्रक्चर की खामियां:** विशेष रूप से दूरस्थ क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे से जुड़ी चुनौतियों का समाधान करना।

मोस्ट फेवर्ड नेशन / Most favoured nation

स्विट्जरलैंड ने भारत के साथ **"मोस्ट फेवर्ड नेशन (MFN)"** संधि निलंबित करने का निर्णय लिया है, जिससे भारतीय कंपनियों पर कर का बोझ बढ़ेगा।

- आगामी एक जनवरी से यह फैसला लागू होगा।
- इसका अर्थ यह है कि स्विट्जरलैंड एक जनवरी, 2025 से भारतीय कंपनियों द्वारा उसके यहां होने वाली कमाई पर 10 प्रतिशत टैक्स लगाएगा।

स्विट्जरलैंड के इस निर्णय के पीछे कारण:

1. **सुप्रीम कोर्ट का निर्णय:**
   - भारत के सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में दोहरा कराधान से बचाव समझौते (DTAA) को लागू करने के लिए इसे आयकर अधिनियम के तहत अधिसूचित करने की आवश्यकता बताई थी।
   - इस फैसले के कारण भारत और स्विट्जरलैंड के बीच MFN (मोस्ट फेवर्ड नेशन) दर्जे पर पुनर्विचार हुआ।
2. **कर दरों में असमानता:**
   - स्विट्जरलैंड की कंपनी नेस्ले को भारत में अर्जित आय पर अन्य कंपनियों की तुलना में अधिक कर चुकाना पड़ रहा था।
   - इससे स्विट्जरलैंड को यह महसूस हुआ कि MFN दर्जा निष्पक्ष रूप से लागू नहीं किया जा रहा।
3. **डीटीएए का प्रावधान:**
   - डीटीएए के अंतर्गत MFN दर्जे वाले देशों को लाभांश, तकनीकी शुल्क और आयकर पर कम दर से भुगतान की सुविधा दी जाती है।
   - इस असमानता को समाप्त करने के लिए स्विट्जरलैंड ने MFN दर्जे को निलंबित करने का फैसला लिया।
4. **निवेश पर प्रभाव:**
   - स्विट्जरलैंड को आशंका थी कि कर की मौजूदा व्यवस्था से उनकी कंपनियों पर अधिक कर भार पड़ रहा है, जिससे उनके देश से होने वाला निवेश प्रभावित हो सकता है।
5. **समानता सुनिश्चित करने की कोशिश:**
   - MFN दर्जा वापस लेने का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि स्विट्जरलैंड की कंपनियों और अन्य देशों की कंपनियों के बीच कराधान में समानता बनी रहे।

1. Most Favoured Nation (MFN) का अर्थ:

- Most Favoured Nation (MFN) का मतलब है कि विश्व व्यापार संगठन (WTO) के सदस्य एक-दूसरे के साथ समान व्यवहार करते हैं।
- MFN के तहत, किसी देश को सबसे कम टैरिफ, उच्चतम आयात कोटा, और कम से कम व्यापारिक बाधाएं मिलती हैं।

2. **गैर-भेदभाव सुनिश्चित करना:**
   - MFN का उद्देश्य व्यापार में भेदभाव को रोकना है।
   - 'राष्ट्रीय उपचार' (National Treatment) भी इसी तरह का एक और उपाय है।
3. **WTO समझौतों में MFN की भूमिका:**
   - 164 WTO सदस्य देशों के बीच MFN स्थिति को मान्यता दी जाती है।
   - यदि किसी एक देश को व्यापारिक रियायत दी जाती है, तो वही सभी सदस्य देशों पर लागू होगी।
   - यह सिद्धांत WTO के GATT (General Agreement on Tariffs and Trade) के शुरुआती प्रावधानों में से एक है।
4. **विशेष छूट:**
   - द्विपक्षीय व्यापार समझौते।
   - विकासशील देशों को विशेष व्यापारिक सुविधा।

MFN का संचालन:

1. **समान व्यवहार:**
   - यदि कोई देश एक सदस्य को विशेष लाभ देता है, तो वह लाभ सभी अन्य WTO सदस्यों को भी देना होगा।
2. **स्थगन और निलंबन:**
   - WTO के आर्टिकल 21बी के तहत कोई भी देश सुरक्षा संबंधी विवादों के चलते दूसरे देश से यह दर्जा वापस ले सकता है।
   - MFN का दर्जा समाप्त करने या स्थगित करने की प्रक्रिया स्पष्ट नहीं है।
   - WTO के नियमों के तहत इसके लिए किसी विशेष अधिसूचना की आवश्यकता नहीं है।

मराठा सैन्य परिदृश्य / Maratha Military Landscapes

हाल ही में, केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री ने कहा कि 'भारत का मराठा सैन्य परिदृश्य' को वर्ष 2024-25 के लिए यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल में शामिल करने के लिए प्रस्तुत किया गया है।

मराठा सैन्य परिदृश्य (Maratha Military Landscapes):

- **मराठा सैन्य परिदृश्य**, जो 17वीं और 19वीं शताब्दी के बीच विकसित हुआ, भारतीय उपमहाद्वीप में एक असाधारण किलाबंदी और सैन्य प्रणाली का प्रतीक है, जिसे मराठा शासकों ने निर्मित किया।
- यह अद्वितीय किलों का नेटवर्क, विविध वर्ग, आकार और प्रकारगत विशेषताओं वाला है, जो साह्यद्री पर्वतमाला, कोंकण तट, डेक्कन पठार और भारतीय उपमहाद्वीप में पूर्वी घाटों के भौगोलिक विशेषताओं के साथ सम्मिलित है।

भारतीय उपमहाद्वीप में निर्मित एक असाधारण किलाबंदी और सैन्य प्रणाली का प्रतीक है, जिसे मराठा शासकों ने बनाया है।

यह नामांकन 12 मुख्य किलों को सम्मिलित करता है:

- **पर्वतीय किले:** सल्हेर, शिवनेरी, लोहगड़, रायगढ़, राजगढ़, गींजी।
- **पर्वतीय-वन किला:** प्रतापगढ़।
- **पर्वतीय-समतल किला:** पन्हाला।
- **तटीय किला:** विजयदुर्ग।
- **जल द्वीप किलें:** खांदीरी, सुवर्णदुर्ग, सिंधुदुर्ग।

यह किलाबंदी विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में फैली हुई है, जिससे मराठा शासकों की रणनीतिक सैन्य क्षमता प्रदर्शित होती है।

मराठा सैन्य परिदृश्य की शुरुआत छत्रपति शिवाजी महाराज के शासनकाल के दौरान (1670 ई.) हुई थी और इसके बाद के शासकों द्वारा 1818 ई. तक जारी रही।

महत्त्व:

- **भौगोलिक क्षेत्रों का रणनीतिक उपयोग:** मराठों ने प्राकृतिक परिदृश्य का उपयोग कर गुरिल्ला युद्ध रणनीतियों को विकसित किया, जिससे उन्होंने मुघल साम्राज्य को भूमि पर और यूरोपीय शक्तियों को तट पर चुनौती दी।
- **मराठा युद्ध रणनीति** भारतीय इतिहास में सैन्य बौद्धिकता का एक अद्वितीय उदाहरण है।

भारत के विश्व धरोहर स्थल:

1. यह यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में अंकित किसी भी क्षेत्र या वस्तु को संदर्भित करता है।
2. इन स्थलों को 1972 के विश्व धरोहर सम्मेलन के तहत उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य के रूप में नामित किया गया है।
3. स्थलों को तीन श्रेणियों के तहत चयनित किया जाता है - सांस्कृतिक, प्राकृतिक, और मिश्रित।

वर्तमान में, भारत के पास 43 विश्व धरोहर स्थल हैं:

1. कुल 35 सांस्कृतिक स्थल
2. सात प्राकृतिक स्थल
3. एक मिश्रित स्थल
4. पहले सूचीबद्ध स्थल थे - अजंता गुफाएं, एलोरा गुफाएं, आगरा किला, और ताज महल, जो 1983 में सूचीबद्ध किए गए थे।
5. सबसे हाल का स्थल "मोइदम्स – अहोम राजवंश का माउंड-बुरियल सिस्टम" असम से जुलाई 2024 में सूचीबद्ध हुआ।
6. भारत को धरोहर स्थलों की संख्या के अनुसार दुनिया में छठे स्थान पर रखा गया है - इटली (60), चीन (59), जर्मनी (54), फ्रांस (53), और स्पेन (50)।

यूनेस्को विश्व धरोहर नामांकन मापदंड:

- यूनेस्को की संचालन दिशानिर्देश 2023 के अनुसार, केवल एक संपत्ति—चाहे सांस्कृतिक, प्राकृतिक या मिश्रित—को प्रत्येक वर्ष विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित करने के लिए प्रस्तावित किया जा सकता है।
- सांस्कृतिक स्थल के लिए छह मापदंड (i से vi) और प्राकृतिक स्थल के लिए चार मापदंड (vii से x) विश्व धरोहर सूची में सम्मिलन के लिए मान्य हैं।
- मराठा सैन्य परिदृश्य विश्व धरोहर में सांस्कृतिक श्रेणी के तहत शामिल होने के लिए प्रस्तुत किया गया है।

वैश्विक डूबने की रोकथाम स्थिति रिपोर्ट / Global drowning prevention status report

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने जिनेवा में अपने पहले वैश्विक डूबने की रोकथाम स्थिति रिपोर्ट जारी की, जो डूबने से होने वाली मौतों की गंभीरता और रोकथाम की आवश्यकता पर जोर देती है।

रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्ष:

1. **वैश्विक डूबने से होने वाली मौतें:** 2021 में डूबने से विश्वभर में 3 लाख लोगों की मृत्यु हुई, जो प्रति घंटे लगभग 30 मौतों के बराबर है।
2. **निम्न और मध्यम आय वाले देशों पर प्रभाव:** 92% डूबने से होने वाली मौतें निम्न और मध्यम आय वाले देशों में हुईं, जो मुख्यत: गरीब और हाशिए पर मौजूद समुदायों को प्रभावित करती हैं।
3. **डब्ल्यूएचओ दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र का बोझ:** इस क्षेत्र, जिसमें भारत भी शामिल है, में 83,000 मौतें दर्ज की गईं, जो वैश्विक डूबने के बोझ का 28% है।
4. **पाँच साल से कम उम्र के बच्चों की संवेदनशीलता:** डूबने से होने वाली कुल मौतों में 24% पाँच साल से कम उम्र के बच्चों की थीं। पाँच से 14 वर्ष के बच्चों की मौतें 19% और 15 से 29 वर्ष के युवाओं की मौतें 14% दर्ज की गईं।
5. **मृत्यु के प्रमुख कारणों में शामिल:** डूबना वैश्विक स्तर पर एक से चार साल के बच्चों के लिए चौथा और पाँच से 14 साल के बच्चों के लिए तीसरा प्रमुख मृत्यु का कारण है।
6. **आर्थिक प्रभाव:** डूबने से बचाव के प्रयासों में निवेश न केवल जीवन बचा सकता है, बल्कि 2050 तक $4 ट्रिलियन के संभावित आर्थिक नुकसान को भी रोक सकता है।

डूबने की रोकथाम के लिए WHO की सिफारिशें:

1. **सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाना:** जल सुरक्षा और डूबने के जोखिमों के प्रति लोगों को जागरूक करें।
2. **बुनियादी ढांचे में सुधार:** उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में खतरों को कम करने के लिए बुनियादी ढांचे में सुधार करें।
3. **सुरक्षित जल परिवहन को बढ़ावा देना:** जल परिवहन को सुरक्षित बनाने और जोखिम कम करने के लिए नियमों को लागू करें।
4. **संवेदनशील समूहों के लिए लक्षित हस्तक्षेप:** बच्चों और हाशिए पर मौजूद समूहों जैसे संवेदनशील आबादी के लिए विशेष उपाय करें।
5. **वैश्विक और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देना:** सर्वोत्तम प्रथाओं और संसाधनों को साझा करने के लिए वैश्विक और क्षेत्रीय सहयोग को प्रोत्साहित करें।

डूबने के बारे में:

1. **परिभाषा:**
   - विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, डूबना उस स्थिति को कहते हैं जिसमें किसी तरल में डूबने या उसमें डूबने से श्वसन प्रणाली बाधित हो जाती है।
   - इसके परिणामस्वरूप मृत्यु, बीमारी या बिना किसी हानि के बचाव हो सकता है।
2. **डूबने के कारण:**
   - बढ़ता समुद्र स्तर
   - शहरी बाढ़
   - असुरक्षित जल परिवहन
   - जोखिमभरी आजीविकाएँ
3. **जोखिम में रहने वाले समूह:**
   - बच्चे और किशोर
   - जबरन विस्थापित लोग
   - गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोग
4. **विश्व डूबने की रोकथाम दिवस:**
   - हर साल 25 जुलाई को यह दिवस मनाया जाता है।
   - इसका उद्देश्य डूबने से जान गंवाने वाले लोगों को श्रद्धांजलि देना और जल सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना है।

मुख्य सिफारिशें:

1. **राजनीतिक इच्छाशक्ति और निवेश:** डूबने से बचाव के लिए मजबूत राजनीतिक प्रतिबद्धता और वित्तीय निवेश आवश्यक है ताकि अधिक जीवन बचाए जा सकें।
2. **डेकयर सेवाएँ:** प्रीस्कूल बच्चों के लिए डेकयर सुविधाएँ उपलब्ध कराकर डूबने के जोखिम को काफी हद तक कम किया जा सकता है।
3. **तैराकी कौशल:** स्कूल के बच्चों को बुनियादी तैराकी और जल सुरक्षा कौशल सिखाने से लाखों जीवन सुरक्षित किए जा सकते हैं।
4. **विधायी कार्रवाई:** मौजूदा कानून अक्सर डूबने के संकट की गंभीरता को नहीं दर्शाते, जिसके लिए नीति सुधार और सख्त प्रवर्तन की आवश्यकता है।

सीई20 क्रायोजेनिक इंजन / CE20 Cryogenic Engine

हाल ही में, इसरो ने तमिलनाडु के महेंद्रगिरि स्थित इसरो प्रोपल्शन कॉम्प्लेक्स में अपने सीई20 क्रायोजेनिक इंजन का समुद्री स्तर हॉट टेस्ट सफलतापूर्वक पूरा किया। यह सफलता भारत के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन "गगनयान" सहित भविष्य की अंतरिक्ष यात्राओं के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

सीई20 क्रायोजेनिक इंजन के बारे में:

1. क्या है सीई20 क्रायोजेनिक इंजन?

- यह एक रॉकेट इंजन है, जो तरल गैसों को ईंधन और ऑक्सीडाइज़र के रूप में उपयोग करता है।
- इन गैसों को अत्यंत ठंडे तापमान पर तरल रूप में रखा जाता है।
- इसे इसरो के लिक्विड प्रोपल्शन सिस्टम सेंटर ने विकसित किया है और यह लॉन्च व्हीकल मार्क-3 (LVM-3) के ऊपरी चरण को शक्ति प्रदान करता है।

2. उपयोग की जाने वाली गैसें:

- **तरल ऑक्सीजन (LOX):** ऑक्सीडाइज़र के रूप में काम करता है, जो -183°C पर तरल बनता है।
- **तरल हाइड्रोजन (LH2):** ईंधन के रूप में कार्य करता है, जो -253°C पर तरल बनता है।
- इन दोनों के बीच होने वाली रासायनिक प्रतिक्रिया से जोर (थ्रस्ट) उत्पन्न होता है।

3. प्रमुख विशेषताएँ:

- **इंजन को पुन: शुरू करने की क्षमता:**
  - मल्टी-एलिमेंट इग्नाइटर से लैस, यह इंजन मिशन के दौरान दोबारा शुरू हो सकता है, जो गगनयान जैसे मिशनों के लिए बेहद जरूरी है।
- **नोजल सुरक्षा प्रणाली:**
  - नोजल में बहाव के अलग होने और कंपन को कम करके प्रदर्शन में सुधार करता है और परीक्षण प्रक्रियाओं को सरल बनाता है।
- **उच्च दक्षता:**
  - यह अधिक जोर उत्पन्न करता है और रॉकेट की पेलोड क्षमता बढ़ाता है।

4. अनुप्रयोग:

- इसे रॉकेट के ऊपरी चरणों में उपयोग किया जाता है, जहाँ उच्च दक्षता उपग्रहों और अंतरिक्ष यानों को कक्षा में स्थापित करने के लिए आवश्यक होती है।

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रमों में क्रायोजेनिक इंजनों का महत्व:

1. **अंतरिक्ष कार्यक्रम को बढ़ावा:**
   - क्रायोजेनिक इंजन रॉकेट की दक्षता और जोर (थ्रस्ट) को बढ़ाते हैं।
   - यह भारत को गगनयान, उपग्रह प्रक्षेपण और ग्रहों की खोज जैसे मिशनों के लिए भारी पेलोड वाले शक्तिशाली रॉकेट लॉन्च करने में सक्षम बनाता है।
2. **स्वदेशी विकास और आत्मनिर्भरता:**
   - क्रायोजेनिक तकनीक में भारत की महारत विदेशी तकनीक पर निर्भरता को कम करती है।
   - भारत उन छह देशों में शामिल है, जिन्होंने अमेरिका, फ्रांस, रूस, चीन और जापान के साथ अपने क्रायोजेनिक इंजन विकसित किए हैं।
3. **बेहतर पेलोड क्षमता:**
   - क्रायोजेनिक इंजन उच्च विशिष्ट आवेग (स्पेसिफिक इम्पल्स) प्रदान करते हैं, जिससे रॉकेट अधिक भारी पेलोड ले जा सकते हैं और दूरस्थ मिशनों को सफलतापूर्वक अंजाम दे सकते हैं।

भविष्य की संभावनाएँ:

1. **बेहतर परीक्षण विधियाँ:**
   - यह परीक्षण उन्नत क्रायोजेनिक इंजन परीक्षण विधियों के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है, जिससे भविष्य में उच्च जोर वाले मिशनों को समर्थन मिलेगा।
2. **मानव अंतरिक्ष अन्वेषण:**
   - इन उन्नतियों से भारत के मानव अंतरिक्ष मिशन "गगनयान" और भारी पेलोड वाले रॉकेट लॉन्च करने की क्षमता को मजबूती मिलेगी।

HPH-15

कुमामोटो विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक नया यौगिक HPH-15 विकसित किया है, जो रक्त शर्करा (Blood Glucose) के स्तर को कम करने और शरीर में चर्बी (Fat) जमा होने से रोकने में मदद करता है। यह मधुमेह के इलाज में एक बड़ी और नई उपलब्धि है।

- इसके साथ ही इसमें एंटीफाइब्रोटिक गुण भी बताए जा रहे हैं, जो कोशिकाओं को स्वस्थ रखने, घाव भरने, ऊतकों की मरम्मत और कैंसर के खतरे को कम करने में सहायक है।

टाइप 2 मधुमेह और HPH-15 के बारे में मुख्य बिंदु:

1. **टाइप 2 मधुमेह की समस्या:**
   - यह बीमारी दुनियाभर में लाखों लोगों को प्रभावित करती है।
   - इसके साथ फैटी लिवर और इंसुलिन रेजिस्टेंस जैसी जटिलताएं होती हैं, जिनका इलाज करना चुनौतीपूर्ण है।
2. **HPH-15 की खोज:**
   - कुमामोटो विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने HPH-15 नामक नया यौगिक खोजा।
   - यह मौजूदा दवाओं, जैसे मेटफॉर्मिन, के मुकाबले अधिक प्रभावी है।
3. **शोधकर्ताओं का नेतृत्व:**
   - इस शोध का नेतृत्व डॉ. हीरोशी टेटीशी और प्रोफेसर एईची अराकी ने किया।
4. **शोध के प्रमुख परिणाम:**
   - HPH-15 कम मात्रा में ही AMP-activated protein kinase (AMPK) को सक्रिय करता है, जो ऊर्जा संतुलन नियंत्रित करने वाला एक महत्वपूर्ण प्रोटीन है।
   - इसने लीवर, मांसपेशियों और फैट कोशिकाओं में ग्लूकोज अवशोषण को बढ़ाया।
   - उच्च वसा आहार (High-Fat Diet) से मोटे चूहों में चर्बी जमा होने को कम किया।
5. **मेटफॉर्मिन से बेहतर:**
   - HPH-15 ने मेटफॉर्मिन की तुलना में बेहतर परिणाम दिए।
   - इसमें अतिरिक्त एंटी-फाइब्रोटिक गुण भी पाए गए, जो लिवर फाइब्रोसिस और अन्य जटिलताओं को ठीक करने में मददगार हो सकते हैं।
6. **प्रकाशन:**
   - यह अध्ययन Diabetologia पत्रिका में प्रकाशित हुआ, जो मधुमेह के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित पत्रिका है।

मधुमेह (Diabetes) एक ऐसी स्थिति है जिसमें शरीर की रक्त शर्करा (ब्लड शुगर) को नियंत्रित करने की क्षमता प्रभावित होती है। यह एक पुरानी और तेजी से बढ़ती स्वास्थ्य समस्या है, जो दुनियाभर में लाखों लोगों को प्रभावित कर रही है।

मधुमेह के प्रकार:

1. **टाइप 1 मधुमेह:**
   - यह एक ऑटोइम्यून रोग है, जिसमें शरीर का प्रतिरक्षा तंत्र अग्न्याशय (Pancreas) की इंसुलिन बनाने वाली कोशिकाओं को नष्ट कर देता है।
   - यह समस्या अधिकतर बच्चों और युवाओं में देखी जाती है।
2. **टाइप 2 मधुमेह:**
   - यह सबसे सामान्य प्रकार है, जिसमें शरीर इंसुलिन का सही उपयोग नहीं कर पाता (इंसुलिन रेजिस्टेंस)।
   - यह अधिकतर वयस्कों में होता है, लेकिन हाल के वर्षों में यह बच्चों में भी बढ़ रहा है।
3. **गर्भावधि मधुमेह (Gestational Diabetes):**
   - यह गर्भावस्था के दौरान होता है और बच्चे के जन्म के बाद सामान्य हो सकता है।
   - हालांकि, इससे भविष्य में टाइप 2 मधुमेह का खतरा बढ़ सकता है।

मधुमेह के प्रमुख कारण:

1. **अनुवांशिक (Genetic):** परिवार में यदि किसी को मधुमेह है तो यह अन्य सदस्यों को भी हो सकता है।
2. **जीवनशैली (Lifestyle):** अस्वस्थ आहार, शारीरिक गतिविधियों की कमी और मोटापा इसके मुख्य कारण हैं।
3. **तनाव:** अत्यधिक मानसिक तनाव मधुमेह का कारण बन सकता है।
4. **उम्र:** उम्र बढ़ने के साथ मधुमेह होने की संभावना बढ़ जाती है।

मधुमेह के लक्षण:

1. अत्यधिक प्यास और भूख लगना।
2. बार-बार पेशाब आना।
3. थकावट महसूस होना।
4. वजन का अचानक घटना या बढ़ना।
5. घावों का धीमे ठीक होना।

जाकिर हुसैन / zakir hussain

मशहूर तबला वादक जाकिर हुसैन का 73 साल की उम्र में निधन हो गया है। जाकिर हुसैन हाई ब्लड प्रेशर के मरीज थे। जिसके चलते उन्हें दिल से जुड़ी समस्याएं पैदा हुईं।

जाकिर हुसैन के बारे में

1. प्रारंभिक जीवन: एक संगीत प्रतिभा:

- जन्म: 1951, मुंबई, भारत
- पिता: तबला वादक उस्ताद अल्ला रक्खा
- बचपन से ही संगीत में असाधारण प्रतिभा दिखाई और सात वर्ष की उम्र में ही मंच पर प्रस्तुति शुरू कर दी।
- पिता के सख्त प्रशिक्षण के कारण वे तबला के एक महान उस्ताद बने।

2. तबला को नई ऊँचाइयाँ दीं:

- जाकिर हुसैन ने तबला को सिर्फ संगत के वाद्य से ऊपर उठाकर एक शक्तिशाली एकल वाद्य के रूप में स्थापित किया।
- उनकी तकनीकी कुशलता और भावपूर्ण वादन ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को वैश्विक पहचान दिलाई।
- पंडित रविशंकर और उस्ताद अमजद अली खान जैसे दिग्गजों के साथ काम किया।

. संगीत में वैश्विक योगदान::

- 1970 में जाकिर हुसैन ने "शक्ति" नामक म्यूज़िक ग्रुप की स्थापना की, जिसमें भारतीय शास्त्रीय संगीत और जैज़ का संगम था।
- प्रसिद्ध कलाकारों जैसे जॉन मैकलॉफलिन, जॉर्ज हैरिसन और ग्रेटफुल डेड के मिकी हार्ट के साथ काम किया।
- उनका ग्रुप "Planet Drum" एक ग्रैमी अवॉर्ड जीतने में सफल रहा।

4. फिल्मों और अन्य संगीत प्रोजेक्ट्स में योगदान:

- उन्होंने Heat and Dust और In Custody जैसी फिल्मों के लिए संगीत रचना की।
- अंतरराष्ट्रीय बैले और ऑर्केस्ट्रा परियोजनाओं पर काम करके भारतीय संगीत को विश्व स्तर पर पहुँचाया।

5. पुरस्कार और सम्मान:

- पद्म श्री (1988) और पद्म भूषण (2002) से सम्मानित।
- ग्रैमी अवॉर्ड (Planet Drum प्रोजेक्ट के लिए)।
- संगीत में उनके योगदान के लिए मानद डॉक्टरेट्स से सम्मान।

संक्षिप्त जानकारी:

- जन्म: 1951, मुंबई, भारत
- पिता: उस्ताद अल्ला रक्खा
- प्रसिद्ध सहयोगी: पंडित रविशंकर, जॉन मैकलॉफलिन, जॉर्ज हैरिसन, मिकी हार्ट
- प्रमुख प्रोजेक्ट्स: शक्ति, Planet Drum
- पुरस्कार: पद्म भूषण, पद्म श्री, ग्रैमी अवॉर्ड
- विरासत: तबला को विश्व स्तर पर पहुँचाने वाले महान कलाकार

जाकिर हुसैन का संगीत के प्रति योगदान भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच पर गौरवान्वित करता है।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per
Year
Buy Now

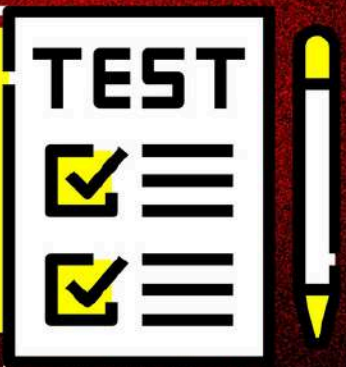

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

FOR ALL

- POLITY
- ECONOMICS
- HISTORY
- GEOGRAPHY

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs 4999/-

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

ONLY
POLITY
1499
RS
DAILY LIVE CLASSES
, WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTISE PROBLEM
Apni Pathshala 7878158882
Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !